भजन

तर्ज–ना तुम बेवफा हो

धनी धाम वाले बड़े मेहरबां है
वो रूहों पे अपनी तो पल पल फिदा हैं

1–माया जहर वो उतारे हमारे
जन्मो के बंधन छुड़ाये हमारे
क्या समझेगें हम वो हमारे क्या है

2–अर्श खजाना लेकर के आए
निसबत हमारी है हमको बुलाए
वो आशिक रूहों के नही तो और क्या है

3–पहचान हमारी हमको कराएं
जान धनी अंगना गले से लगाएं
ये सोचे हम क्या थे आज क्या है